Name of the college - A.P.S.M. college, Barauni, Begusarai
(L.N.M.U, Darbhanga)

Name - Dr. Bharti Kumari A.I.H. & C

Lesson / plan of the class - B.A(H) Part I paper I

Name of the topic - वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक कणाद

Date - 28-4-2021

वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक कणाद मुनि कहे जाते हैं। इनको काश्यप, उलूक, औलूक, पैलुक आदि नामों से भी जाना जाता है। उलूक द्वारा प्रतिपादित होने के कारण इस दर्शन को औलुक्य दर्शन भी कहते हैं। जनश्रुति है कि ईश्वर ने उलूक का रूप धारण कर कणाद को विशेष पदार्थों को स्वंय उपदेश किया था। अतः कणाद का रूप धारण कर कणाद को विशेष पदार्थों का स्वंय उपदेश किया था। अतः कणाद का नाम उलूक तथा इस दर्शन का नाम औलुक्य हुआ।

कणाद के विषय में यह भी जनश्रुति है कि वे फसल कट जाने के बाद खेतों में से बचे हुए अन्न-कण बीनकर उसी से अपना निर्वाह करते थे। अतः उनका नाम कनाद (कणान, अत्ति इति कणाद) प्रसिद्ध हुआ। 'वायुपुराण' के अनुसार कणाद का जन्म-स्थान प्रभासपत्तन था। वे सोमवर्मा के शिष्य थे। इनका समय सामान्यतः 400 ई.पू. माना गया है।

वैशेषिक और न्यायदर्शन — भारतीय दर्शन में न्याय और वैशेषिक दर्शनों में घनिष्ठ सम्बंध प्रतिपादित किया गया है। यह विषय इतना

P.T.O.

ध्वनित है कि दोनों दर्शनों का सम्मिलित रूप न्याय वैशेषिक कहा गया है। वैशेषिक दर्शन के सात पदार्थों और परमाणुवाद का विवेचन न्यायविषयक ग्रन्थों में लिखा जाता रहा है। न्याय और वैशेषिक के तत्वों का सम्मिश्रण 13 वी शताब्दी में आरम्भ हुआ। केशव केशव मिश्र की तर्कभाषा में न्याय के साथ ही वैशेषिक तत्वों का समावेश है। 17 वी सदी ई. में, विश्वनाथ पंचानन ने 'कारिकावली' और उनकी टीका न्याय 'सिद्धान्तमुक्तावली' में न्याय के साथ वैशेषिक के तत्वों का सम्मिश्रण किया। अन्नभट्ट के तर्कसंग्रह में भी यही परम्परा है वे स्वयं लिखते हैं — वैशेषिक और न्याय का सुखपूर्वक ज्ञान कराने के लिए इस ग्रन्थ की रचना की जा रही है।

वरदराज की तार्किकरक्षा और जगदीश महाचार्य का 'तर्कामृत' इसी प्रकार के ग्रन्थ है।

भारती कुमारी
A.I.H.&C
28-4-2021